وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِيثَٰقَ بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ لَا تَعۡبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ
وَبِٱلۡوَٰلِدَيۡنِ إِحۡسَانٗا وَذِي ٱلۡقُرۡبَىٰ وَٱلۡيَتَٰمَىٰ وَٱلۡمَسَٰكِينِ
وَقُولُواْ لِلنَّاسِ حُسۡنٗا وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ ثُمَّ
تَوَلَّيۡتُمۡ إِلَّا قَلِيلٗا مِّنكُمۡ وَأَنتُم مُّعۡرِضُونَ ٨٣ وَإِذۡ أَخَذۡنَا
مِيثَٰقَكُمۡ لَا تَسۡفِكُونَ دِمَآءَكُمۡ وَلَا تُخۡرِجُونَ أَنفُسَكُم
مِّن دِيَٰرِكُمۡ ثُمَّ أَقۡرَرۡتُمۡ وَأَنتُمۡ تَشۡهَدُونَ ٨٤ ثُمَّ أَنتُمۡ هَٰٓؤُلَآءِ
تَقۡتُلُونَ أَنفُسَكُمۡ وَتُخۡرِجُونَ فَرِيقٗا مِّنكُم مِّن دِيَٰرِهِمۡ
تَظَٰهَرُونَ عَلَيۡهِم بِٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِ وَإِن يَأۡتُوكُمۡ أُسَٰرَىٰ
تُفَٰدُوهُمۡ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ إِخۡرَاجُهُمۡۚ أَفَتُؤۡمِنُونَ بِبَعۡضِ
ٱلۡكِتَٰبِ وَتَكۡفُرُونَ بِبَعۡضٖۚ فَمَا جَزَآءُ مَن يَفۡعَلُ ذَٰلِكَ
مِنكُمۡ إِلَّا خِزۡيٞ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۖ وَيَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰٓ
أَشَدِّ ٱلۡعَذَابِۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ٨٥ أُوْلَٰٓئِكَ
ٱلَّذِينَ ٱشۡتَرَوُاْ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا بِٱلۡأٓخِرَةِۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ
ٱلۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنصَرُونَ ٨٦

Theme	
Israelites made a covenant and broke it. Their behaviour with their own people.	बनी इस्राईल ने अहद बाँधा और फिर उसे तोड़ दिया। अपनी ही क़ौम के साथ उनका तर्ज़-ए-अमल।
Tarjumani	
Remember, when We took a	याद करो, इसराईल की औलाद से

covenant (firm commitment) from the children of Israel: "You shall worship none but Allah; be good to your parents, relatives, orphans and destitute, speak fair to the people, establish 'Salah', and pay 'Zakah'". But you broke the covenant, except a few of you, and you paid no heed. Also remember another covenant which We took from you: That you shall not shed blood among yourselves and you shall not expel your own people from your homes; you confirmed it and you are witness to it. Yet, there you are, killing your own people, expelling a group amongst you from their homes, backing each other with sin and aggression; and if they come to you as captives, you trade them for ransoms whereas their expulsion was unlawful for you to begin with. Do you believe in a part of your Holy Book and reject the rest? So, what other punishment do such people among you, who behave	हमने पुख्ता अहद लिया था कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, माँ-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों और मिसकीनों के साथ नेक सुलूक करना, लोगों से भली बात कहना, नमाज़ कायम करना और ज़कात देना, मगर थोड़े आदमियों के सिवा तुम सब इस अहद से फिर गए और अब तक फिरे हुए हो	फिर ज़रा याद करो, हमने तुमसे मज़बूत अहद लिया था कि आपस में एक-दूसरे का खून न बहाना और न एक-दूसरे को घर से बेघर करना	तुमने इसका इक़रार किया था, तुम ख़ुद इस पर गवाह हो	मगर आज वही तुम हो कि अपने भाई-बन्दों को क़त्ल करते हो, अपनी बिरादरी के कुछ लोगों को बेखानमाँ कर देते हो, जुल्म व ज्यादती के साथ उनके ख़िलाफ़ जत्थेबंदियाँ करते हो और जब वे लड़ाई में पकड़े हुए तुम्हारे पास आते हैं तो उनकी रिहाई के लिए फिदये का लेन-देन करते हो, हालाँकि उन्हें उनके घरों से निकालना ही सिरे से तुमपर हराम था	तो क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से के साथ कुफ़्र करते हो? फिर तुममें से जो लोग ऐसा करें, उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या है

like this, deserve, than disgrace in this world and to be driven to grievous punishment on the Day of Judgment? Allah is not unaware of what you do. Such are the people who trade in the life of Hereafter for the life of this world; so neither their punishment shall be lightened nor shall they be helped.	कि दुनिया की ज़िन्दगी में ज़लील व ख़ार होकर रहें और आख़िरत में शदीदतरीन अज़ाब की तरफ़ फेर दिए जाएँ? अल्लाह उन हरकात से बेख़बर नहीं है जो तुम कर रहे हो--- ये वे लोग हैं जिन्होंने आख़िरत बेचकर दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद ली है, लिहाज़ा न उनकी सज़ा में कोई तखफीफ़ होगी और न उन्हें कोई मदद पहुँच सकेगी।
Tafsir	